राष्ट्रीय
सहारा

कानपुर • बुधवार • 21 दिसम्बर • 2022

आलू फसल को झुलसा रोग का खतरा

ुर (एसएनबी)। न मौसम में आलू ा को झुलसा रोग की आशंका वढ़ गई ससे किसानों को रहने की जरूरत है। न में गिरावट व रण में अत्यधिक नमी ली की वजह से ा रोग का खतरा है। इस वीमारी से के पौधे की झुलस जाती हैं। लगता है जैसे जल गई हैं। ा रोग से आलू पादन प्रभावित होता है।

आलू फसल में लगा झुलसा रोग। फोटो : एसएनवी

समय रहते दवाओं को छिड़काव कर आलू फसल का बचाव करें किसान

ीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के कों ने आलू में झुलसा रोग के खतरों कर किसानों को जागरूक करना शुरू या है। आलू वैज्ञानिक डॉ. राजीव ने कि फफूंद की वजह से आलू के पौधों में अधिक नमी के कारण झुलसा रोग होता है। इस समय इसकी रोकथाम नहीं की गई तो पूरी फसल खेत में ही झुलस जाती है। उन्होंने आलू उत्पादक किसानों को सलाह दी है कि कॉपर हाइड्रोक्साइड अथवा क्लोरोथालोनील 2 ग्राम प्रति लीटर के हिसाव से आलू फसल में छिड़काव करें। इससे आलू के लिए महामारी माने जाने वाले इस वीमारी से फसल को वचाया जा सकता है।

रहस्य संदेश

RNI.NO.UPHIN2007/2

355 एटा से प्रकाशित बुधवार 21 दिसंबर 2022 पृष्ठ : 8 मूल्य : 50 पैसा मात्र

आलू फसल को झुलसा लगने की संभावना

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के आलू वैज्ञानिक डॉ राजीव ने बताया कि वर्तमान मौसम में आलू की फसल में झुलसा रोग लगने की आशंका बढ़ गई है।जिससे किसानों को सतर्क रहने की आवश्यकता है।उन्होंने बताया कि मौजूदा समय में तापमान में गिरावट और वातावरण में अत्यधिक नमी व बदली की वजह से आलू की फसल में झुलसा रोग लगने की संभावना बढ़ गई।इस बीमारी से आलू के पौधे की पत्तियां झुलस जाती है।ऐसा लगता है जैसे पत्तियां जल गई हैं। झुलसा रोग लगने से आलू का उत्पादन भी प्रभावित होने की आशंका है। इसीलिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने आलू उत्पादक किसानों को जागरूक करना शुरू कर दिया है। आलू वैज्ञानिक डॉ राजीव ने बताया कि फफूंद की वजह से आलू के पौधों में अधिक नमी के कारण झुलसा रोग होता है।समय से इसकी रोकथाम न की गई तो पूरी फसल खेत में ही झुलस जाती है। उन्होंने आलू उत्पादक किसानों को सलाह दी है कि कॉपर हाइड्रोक्साइड 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से अथवा क्लोरोथालोनील 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से आलू फसल में छिड़काव कर दें। जिससे इस महामारी रूपी बीमारी से आलू फसल को बचाया जा सकता है।

आलू फसल को झुलसा रोग की आशंका, रोकथाम जरूरी

❑ कृषि वैज्ञानिकों ने बताये फसल बचाने के उपाय

कानपुर, 20 दिसम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के आलू वैज्ञानिक डॉ राजीव ने बताया कि वर्तमान मौसम में आलू की फसल में झुलसा रोग लगने की आशंका बढ़ गई है, जिससे किसानों को सतर्क रहने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि मौजूदा समय में तापमान में गिरावट और वातावरण में अत्यधिक नमी व बदली की वजह से आलू की फसल में झुलसा रोग लगने की संभावना बढ़ गई। इस बीमारी से आलू के पौधे की पत्तियां झुलस जाती है।ऐसा लगता है जैसे

पत्तियां जल गई हैं। झुलसा रोग लगने से आलू का उत्पादन भी प्रभावित होने की आशंका है। इसीलिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने आलू उत्पादक किसानों को जागरूक करना शुरू कर दिया है। आलू वैज्ञानिक डॉ राजीव ने बताया कि फफूंद की वजह से आलू के पौधों में अधिक नमी के कारण झुलसा रोग होता है।समय से इसकी रोकथाम न की गई तो पूरी फसल खेत में ही झुलस जाती है। उन्होंने आलू उत्पादक किसानों को सलाह दी है कि कॉपर हाइड्रोक्साइड 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से अथवा क्लोरोथालोनील 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से आलू फसल में छिड़काव कर दें। जिससे इस महामारी रूपी बीमारी से आलू फसल को बचाया जा सकता है।

हिंदुस्तान कानपुर 21/12/2022

आलू पर झुलसा रोग का खतरा : राजीव

कानपुर। आलू फसल पर झुलसा रोग का खतरा है। सीएसए के आलू वैज्ञानिक डॉ.राजीव ने एडवाइजरी जारी की है। कहा कि तापमान में गिरावट और वातावरण में अत्यधिक नमी व बदली की वजह से आलू की फसल में झुलसा रोग लगने की संभावना बढ़ गई है। आलू के पौधों की पत्तियां झुलस जाती हैं।